P: ISSN NO.: 2394-0344
E: ISSN NO.: 2455-0817
Remarking An Analisation
RNI No.UPBIL/2016/67980
Vol-I* Issue-VI*September - 2016

वर्तमान परिदृश्य में महात्मा गाँधी के वैचारिक चिंतन की प्रासांगिकता

अमित शुक्ल
सहायक प्राध्यापक,
हिन्दी विभाग,
शा.ठाकुर रणमत सिंह महाविद्यालय,
रीवा,म0 प्र0

सारांश

देखा जाए तो गाँधी जी की प्रार्थना सभाएं किसी मंदिर में न होकर खुले आकाश के नीचे होती थीं,और उन्होंने हिन्दू, मुस्लिम, ईसाई, पारसी,और बौद्ध धर्मग्रन्थों के पाठ इनमें शामिल करके इन्हें धार्मिक सामांजस्य का प्रतीक बना दिया। गाँधी जी का सामाजिक चिन्तन और उनका समाज सुधार नीति पर लगाए गए तमााम आरोंपों के बावजूद भी ये स्पष्ट होता है कि महात्मा गाँधी जी ने भारत में दलित चेतना को जागृत करने में महत्वपूर्ण योगदान दिया। उन्होने अपने समय की सम्पूर्ण जनमानस की चेतना को आंदोलित किया। जनशक्ति उनका प्रमुख हथियार था, और इसी व्यापक जनशक्ति के प्रति विश्वास ने दलितों के भीतर चेतना उत्पन्न की। गाँधी जी ने अपने दर्शन का मुख्य आधार सत्य और अहिंसा को बनाया और इसी को उन्होंने जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक और नैतिक रूप में लागू किया। उन्हे इस बात पर विश्वास था कि इस आधार पर प्रतिस्थापित राज्य एक ऐसा राज्य होगा जिसमे न्याय, प्रेम और अहिंसा का वर्चस्व रहेगा। जिसमें कोई राजा नही होगा केवल जनता का शासन होगा।

मुख्य शब्द : महात्मागाँधी, वैचारिकचिंतन, अहिंसा, जनमानस, चेतना, दलित, पापी, संत,

प्रस्तावना

महात्मा गाँधी ने एक बार कहा था कि सत्य एक विशाल वृक्ष है, उसकी ज्यों–ज्यों सेवा की जाती है त्यों–त्यों अनेक फल आते हुए दिखाई देते हैं, उनका अंत नहीं होता – ज्यो ज्यों हम गहरे पैठते हैं, त्यों त्यों उसमें से रत्न निकलते हैं। सेवा के अवसर हाथ आते रहते हैं। गाँधी जी सत्य और अहिंसा के पुजारी थे। पर वे एक महान राष्ट्र निर्माता, दार्शनिक, धर्म मर्मज्ञ, समाज सुधारक, शिक्षा शास्त्री, दलितों के मसीहा आदि के रूप में उन्हें जाना जाता है। उनका योगदान केवल एक क्षेत्र तक सीमित नहीं है। उन्होंने जीवन के विभिन्न पहलुओं पर अपने विचार प्रकट किए हैं।[1] देखा जाए तो गाँधी जी ने अपने दर्शन का मुख्य आधार सत्य और अहिंसा को बनाया और इसी को उन्होंने जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक और नैतिक रूप में लागू किया। उन्हे इस बात पर विश्वास था कि इस आधार पर प्रतिस्थापित राज्य एक ऐसा राज्य होगा जिसमे न्याय, प्रेम और अहिंसा का वर्चस्व रहेगा। जिसमें कोई राजा नहीं होगा केवल जनता का शासन होगा। सत्य, अहिंसा के पुजारी महात्मा गाँधी के सम्पूर्ण वैचारिक चिंतन की प्रासांगिकता आज भी है, उनका कहना था कि मेरी कल्पना का स्वराज्य तब आयेगा जब हमारे मन में यह बात अच्छी तरह से जम जाये कि हमें स्वराज्य सत्य ओर अहिंसा के शुद्ध साधनों द्वारा हासिल करना है। गाँधी जी के आदर्श राजाराम राज्य की अवधारणा रामराज्य की नीव पूर्ण रूप से सत्य और अहिंसा पर आधारित है।गाँधी जी भारतीय संस्कृति के पुजारी, प्रतीक और आध्यात्मिकता के पथ के पथिक थे। इसी से वो भारत को भारतीय संस्कृति के सांचे में ढालना चाहते थे। पर बाधाओं के चलते उन्हे अपने जीवन में अनेक उतार चढ़ाव देखने पड़े। महात्मा गाँधी ने सारे देश को एकजुट कर अंग्रेजों का शासन खत्म कर भारतवासियों को आजादी दिलवायी। उन्होंने देश मे गठित स्वदेशी सरकार में कोई पद नहीं लिया, और हिन्दू मुस्लिम दंगों को शांत कर भारत में हिन्दू –मुस्लिम सौहार्द्र के महान लक्ष्य के लिए अपने प्राणों की आहुति दे दी। ऐसे महान महापुरूष का स्मरण करना पवित्र तीर्थ स्थानों में स्नान करने जैसा लगता है। गाँधी जी ने व्यक्ति को हस्तकला सीखने पर जोर दिया मन की उन्नति के लिए उन्होंने सत्य,अहिंसा,ब्रहमचर्य,कायिक श्रम,सर्वधर्म समभाव पर जोर दिया। गाँधी जी ऐसे महापुरूष थे जिनका सारा जीवन लोंगों के लिए

P: ISSN NO.: 2394-0344
E: ISSN NO.: 2455-0817
Remarking An Analisation
RNI No.UPBIL/2016/67980
Vol-I* Issue-VI*September - 2016

ही था। उन्हे न कोई अहंकार और न संशोधन ही कोई स्वार्थ। वे दूसरे के दुख को अपना दुख और और दूसरे के पाप से अपने को पापी भी मानते थे। इसी कारण वे महात्मा के रूप में जाने जाते थे। महात्मा यानी आत्मा इतनी विशाल हो गयी कि हर एक के शरीर के साथ जुड़ गयी। आज के भूमंडलीकरण के इस दौर में जहां लोंगों में रिश्ते निभाना भी बेईमानी सा लगता है, उस दौर में दूसरे के पाप से अपने को पापी मान लेना ये बहुत बड़ी बात है। हम सभी को प्रेरणा ले महात्मा गाँधी के पद चिन्हों में चलने की कोशिश करनी चाहिए। शिक्षा के संबध में गाँधी जी का ये मानना था कि शरीर और मस्तिष्क के विकास में बुनियादी शिक्षा का होना महत्वपूर्ण साधन है। इससे अक्षरों का ज्ञान और प्राथमिक शिक्षा के बुनियादी कारक जैसे पढ़ना, लिखना और गणित के ज्ञान रूप में शिक्षा में संकल्पना और इसके कार्य को सामान्य समझ पर तीक्ष्ण वैशम्य का उभर आया। गाँधी जी का कहना था कि हमें अपनी सभी भाषाओं पर सुधार लाने की आवश्यकता है।

उद्देश्य और महत्व

संविधान में हिन्दी के साथ अंग्रेंजी भाषा को राजभाषा के रूप में प्रयुक्त करने की छूट पर गाँधी जी अत्यंत विचलित थे, उनका ये मानना था कि जिस देश की कोई राष्ट्रभाषा न हो वो देश गूंगे के समान है। गाँधी जी जहां देश की अनेक समस्याओं से चिन्तित रहे वहीं वे स्त्री षिक्षा को भी लेकर भी। उनका कहना था कि स्त्रियों को पुरूषों के समान ही अवसर मिलने चाहिए। व्यावसायिक शिक्षा पर भी जोर दिया। देखा जाए तो गाँधी जी एक धार्मिक व्यक्ति थे पर शिक्षा में धर्म की शिक्षा देने के विरूद्ध रहे। वे राष्ट्रीय शिक्षा के पक्षधर रहे,इसलिए राष्ट्रीय त्यौहार विद्यालयों में मनाने की ओर अत्यधिक बल दिया गया। गाँधी का ये मानना रहा कि मानव सेवा सबसे बड़ी सेवा है, और बालक को मानव सेवा की ओर प्रवृत्त करना सबसे बड़ा और सच्चा धर्म है। राष्ट्रीय शिक्षा की अवधारणा से तात्पर्य गाँधी जी उच्च एवं निम्न वर्ग शिक्षा प्राप्त करने के बाद निम्न वर्ग का शोषण करता था। वर्धा में 1937 में गाँधी जी ने राष्ट्रीय शिक्षा की रूपरेखा प्रस्तुत की जिसे राष्ट्रीय वर्धा योजना कहा गया। इस प्रकार गाँधी जी का योगदान प्रत्येक क्षेत्र में दृष्टिगोचर होता है, जो समाज, राष्ट्र और व्यक्ति के हित में हो। गाँधी जी का सम्पूर्ण जीवन सिद्धान्त उनकी पुस्तक हिन्द स्वराज में देखने को मिलता है। गाँधी के विचारों को अगर आज के दौर की समस्याओं को दृष्टिगत रख देखें तो उनका अहिंसावाद सभी समस्याओं के हल का एक कारगर उपाय हो सकता है। गाँधी जी की दृष्टि में अपने ही विवेक सम्मत इच्छा व अर्न्तचेतना की आवाज के अनुसार कार्य करने में स्वतंत्रता निहित है।दूसरों की इच्छा से निर्देषित होना परतंत्रता है।[2] इसी वजह से व्यक्तिगत स्वतंत्रता को वे बहुमूल्य मानते थे। गाँधी जी के शब्दों में –मेरे लिए स्वतंत्रता का अर्थ स्वराज्य से है जो हमारे देशवासियों के लिए सबसे अच्छा है। व्यक्ति की पूर्ण स्वतंत्रता का समर्थन करते हुए गाँधी जी ने कहा, केवल व्यक्तिक स्वतंत्रता ही व्यक्ति को समाज की सेवा में स्वेच्छा से समर्पण करने के लिए प्रेरित करती है। यदि उससे यह स्वतंत्रता छीन ली जाए तो वह एक यंत्र, मात्र बन जाता है और समाज बर्बाद हो जाता है। व्यक्तिक स्वतंत्रता के अभाव के आधार पर किसी भी समाज का निर्माण किया जा सकता है। यह स्थिति मनुष्य के प्रकृति के विरूद्ध है। गाँधी जी के ये षब्द कि स्वराज्य एक पवित्र और वैदिक शब्द है जिसका अर्थ आत्म शासन और आत्म संयम है। इस प्रकार गाँधीवाद मात्र एक कोरा राजनीतिक सिद्धान्त नहीं है, वह एक संदेश व जीवन दर्शन है जो आज भी प्रासांगिक है। इस तरह गाधीं जी भारत के प्रत्येक क्षेत्र की ओर अपना ध्यान केन्दित कर सुधार की ओर सभी का ध्यान आकृष्ट किया। फिर वो आर्थिक ही क्यों न हो गाँधी जी ने मार्क्स की तरह अर्थशास्त्र को आधारभूत शास्त्र एवं आर्थिक संरचना को समाज की आधारभूत संरचना माना है। वो नैतिकता को समाज की आधारभूत संरचना मानते थे तथा राजनीति की तरह अर्थनीति को भी नैतिकता पर आधारित मानते। समाज एवं व्यक्ति के व्यवस्थित विकास के लिए आर्थिक गतिविधियों को मानवीय, स्वभाव, प्राकृतिक नियम, एवं ईश्वरीय इच्छा के अधीन मानकर उसमें सुधार लाने का प्रयास गाँधी जी ने बहुत किया। गाँधी जी ने श्रम की पवित्रता व महत्व को स्थापित किया। देखा जाए तो गाँधी जी राष्ट्रीयकृत उद्योगों की बात स्वीकार करते हैं लेकिन साथ ही मानवीय हितों को सर्वोपरि रखने की बात भी कहते हैं। और हरेक बिन्दु पर भारतीयों को सचेत रहने की बात करते हैं। गाँधी जी का वैचारिक चिंतन सर्वस्य है, फिर दलित चेतना इससे अछूता कैसे रह सकता है। उन्होंने हरिजन नामक पत्र एवं हरिजन सेवक संघ नामक संस्था के माध्यम से दलितोत्थान के कार्यक्रम को वैचारिक व व्यवहारिक आयाम प्रदान किए। उन्ही की प्रेरणा और प्रभाववश कांग्रेस ने सन् 1919 में एक प्रस्ताव पारित कर कहा कि यह कांग्रेस भारतवासियों सें आग्रहपूर्वक कहती है कि परम्परा से दलित जातियों पर जो रूकावटें चली आ रही हैं वो बहुत दुख देने वाली और क्षोभ कारक हैं, जिससे दलित जातियों को बहुत कठिनाईयों और असुविधाओं का सामना करना पड़ता है। इसलिए न्याय और भलमनसी का ये तकाजा है कि ये तमाम बंदिषें उठा दी जाएं। इस प्रकार के प्रस्ताव कांग्रेस में आगे भी पारित हेते रहे। गाँधी जी सामाजिक सुधारों के माध्यम सें जनता को एकता का पाठ पढ़ाकर ही स्वाधीनता प्राप्त का लक्ष्य निर्धारित किया था। वे अपने स्वभाव व संस्कारों से मूलतः एक परिवर्तनवादी नहीं बल्कि एक सच्चे और तपोनिष्ठ सुधारवादी थे।[3] इसी कारण उन्होने वर्णव्यवस्था और जातिप्रथा पर सीधा आघात न करके इन व्यवस्थाओं में व्युत्पन्न अस्पृष्यता जैसी कुरीति पर आकमण किया। देखा जाए तो गाँधी जी की प्रार्थना सभाएं किसी मंदिर में न होकर खुले आकाश के नीचे होती थीं, और उन्होने हिन्दू, मुस्लिम, ईसाई, पारसी, और बौद्ध धर्मग्रन्थों के पाठ इनमें शामिल करके इन्हें धार्मिक सामांजस्य का प्रतीक बना दिया। गाँधी जी का सामाजिक चिन्तन और उनका समाज सुधार नीति पर लगाए गए तमाम आरोंपों के बावजूद भी ये स्पष्ट होता है कि महात्मा गाँधी जी ने भारत में दलित चेतना को जागृत करने में महत्वपूर्ण योगदान दिया। उन्होने अपने समय की सम्पूर्ण जनमानस की चेतना को आंदोलित किया। जनशक्ति उनका प्रमुख हथियार था, और इसी व्यापक जनशक्ति के प्रति विश्वास ने दलितों के भीतर चेतना उत्पन्न की।[4]

P: ISSN NO.: 2394-0344
E: ISSN NO.: 2455-0817
Remarking An Analisation
RNI No.UPBIL/2016/67980
Vol-I* Issue-VI*September - 2016

गाँधी जी का सम्पूर्ण वैचारिक चिन्तन के चलते डॉ. राधाकृष्णन के वो तीन सवाल जो उन्होंने महात्मा गाँधी जी से पूंछे थे। गाँधी जी और उनके बीच अत्यंत रोचक बातें हुईं। वो डॉ. राधाकृष्णन ने महात्मा गाँधी जी से तीन सवाल ये पूंछे कि

1. आपका धर्म क्या है।
2. आपके जीवन में धर्म का क्या प्रभाव है।
3 सामाजिक जीवन में इसकी क्या उपयोगिता है।

गाँधी जी ने पहले सवाल का उत्तर दिया–मेरा धर्म है हिन्दुत्व,यह मेरे लिए मानवता का धर्म और मै जिन धर्मों को जानता हूँ उनमे ये सर्वोत्तम है।

गाँधी जी ने दूसरे सवाल के उत्तर में कहा– आपके प्रश्न में भूतकाल के बजाय वर्तमानकाल का प्रयोग खास मकसद से किया गया है। सत्य और अहिंसा के माध्यम से मै अपने धर्म से जुड़ा हूँ । मैं हमेशा अपने धर्म को सत्य का धर्म कहता हूँ। यहां तक ईश्वर सत्य है कहने कि बजाय मैं कहता हूं, सत्य ही ईश्वर है। सत्य से इंकार हमने जाना ही नहीं है। नियमित प्रार्थना मुझे अज्ञात सत्य यानी ईश्वर के करीब ले जाती है।

तीसरे सवाल पर गाँधी जी का जवाब था– इस धर्म का सामाजिक जीवन पर प्रभाव रोजाना के सामाजिक व्यवहार मे परिलक्षित होता है, या हो सकता है, ऐसे धर्म के प्रति सत्यनिष्ठ होने के लिए व्यक्ति को जीवन पर्यन्त अपने अहं को त्याग करना होगा। जीवन के असीम सागर की पहचान में अपने एकात्म और समग्र विलोप किए बिना सत्य का एहसास संभव नही है। इसलिए मेरे लिए समाज सेवा से बचने का कोई रास्ता नहीं है। इसके परे या इसके बिना संसार में कोई खुशी नहीं है। जीवन का कोई भी क्षेत्र समाज सेवा से अछूता नहीं है। इसमें –ऊँच नीच जैसा कुछ भी नही है। दिखते अलग–अलग हैं पर हैं सब एक।[5] गाँधी जी का कहना था कि जितनी गहराई से मैं हिन्दुत्व का अध्ययन कर रहा हूं उतना ही मुझमें विश्वास गहरा होता जाता है। हिन्दू ब्रहम्मांड जितना ही व्यापक है मेरे भीतर से कोई मुझे बताता है कि मै एक हिन्दू हूं और कुछ नहीं। सत्य अहिंसा और शोषितों के कल्याण की भावना उन्होने वेदों से ली। इस वैदांतिक भावना को अपने जीवन की कसौटी पर रखकर और अपने राजनैतिक फैंसलों का आधार बनाकर उन्होने भारत के सामाजिक, राजनैतिक जीवन में संचारित किया। स्वतंत्रता संग्राम को जन आंदोलन में बदलने की गाँधी जी को बड़ी सफलता सत्य, अहिंसा, त्याग, तपस्या के आदर्षों के प्रति समर्पण के कारण मिली। भारतीयों के दिमाग में महात्मा गाँधी जी कि ये छवि युगों तक बनी रहेगी। अपनी आत्मकथा सत्य के प्रयोग में उन्होने ये उल्लेख किया है कि मैने अपने आध्यात्मिक अनुभवों से ही शक्तियां संचित की हैं। यदि विश्व अहिंसा को नही अपनाता है तो उसका परिणाम मानव जाति का विनाष होगा, जैसे हिरोशिमा का अस्तित्व मिट गया था। महात्मा गाँधी का ये मानना था कि जो जितना बड़ा पापी है वो उतना बड़ा ही संत है।

निष्कर्ष

निष्कर्ष ये है कि सत्य, अहिंसा के पुजारी महात्मा गाँधी के सम्पूर्ण वैचारिक चिंतन की प्रासांगिकता आज भी है, प्रश्न ये है कि हम उसे कैसे और किस रूप में लेते हैं। आज के इस भूमंडलीकरण, ग्लोबाइजेशन की दौड़ती दूनिया में गाँधी जी के विचारों को कितने आगे ले जा पायेंगे, और अगर ले गए तो सचमुच मेरा भारत महान ही नही उसकी छवि विश्व में हमेशा के लिए महान हो जाएगी।[6]

संदर्भ गन्थ सूची

1. शोध समीक्षा और मूल्यांकन – अंतर्राष्ट्रीय शोध पत्रिका, जयपुर– 2009 पृष्ठ,10
2. कृतिका अंतर्राष्ट्रीय शोध पत्रिका,उरई – 2008 पृष्ठ, 35
3. सत्य के प्रयोग,आत्मकथा–मोक .गाँधी–नवजरवन प्रकाशन अहमदाबाद– 1957 पृष्ठ,40 ,81
4. नव भरत समाचार पत्र, सतना बुरूवार, 02 अक्टूबर, 2008, पृष्ठ, 4
5. जनसत्ता समाचार पत्र–2010, 06 जून, पृष्ठ,05
6. स्वयं का सर्वेक्षण व निष्कर्ष